VIBRANT GANGA SERIES

पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय
इन्दिरा पर्यावरण भवन,
जोरबाग रोड, नई दिल्ली – 110003

भारतीय वन्यजीव संस्थान
Wildlife Institute of India

GACMC
Ganga Aqualife Conservation Monitoring Centre

चन्द्रबनी, देहरादून – 248 001 उत्तराखण्ड
www.wii.gov.in
http://www/wii.gov.in/nmcg/priority-species

Azadi Ka Amrit Mahotsav

गंगा नदी से लुप्त होती जलीय जीवः

डॉल्फिन

गंगा संरक्षण परियोजना

भारतीय वन्यजीव संस्थान
Wildlife Institute of India

डॉल्फिन जलीय पारिस्थिकी तंत्र के अनुकूल विशेष शारीरिक बनावट वाली स्तनधारी जीव है। गंगा बेसिन में डॉल्फिन कि दो प्रजातियां पायी जाती हैं : मीठे पानी में रहने वाली गांगेय डॉल्फिन तथा सागर तटों के निकट और ईस्टुअरी तथा नदियों में पायी जाने वाली इरावदी डॉल्फ़िन। डॉल्फिन पूर्णतया जलीय होती हैं जो गहरे पानी में पाई जाती है। इनके दैनिक एवं मौसमी प्रवास के लिए नदीधारा का अविरल होना महत्वपूर्ण है। इन प्रजातियों के संरक्षण के लिए आद्र भूमि और नदी तंत्र की संयोजकता ज़रूरी है।

गांगेय डॉल्फिन
(प्लैटानिस्टा गेंजेटिका)

आईयूसीएन रेड लिस्ट (IUCN Red List) - संकटग्रस्त (Endangered)। भारतीय वन्यजीव संरक्षण अधिनियम, 1972 -अनुसूची I। साईट्स (CITES) - परिशिष्ट I

गांगेय डॉल्फिन के शरीर की संरचना मजबूत के साथ साथ लचीली, बड़े फ्लिपर्स तथा कम त्रिकोणीय पृष्ठीय पंख वाली होती है। इनकी थूथन लंबी और पतली होती हैं तथा सिर के ऊपरी भाग में एक श्वसन छिद्र होता है। यह 30 से 120 सेकंड्स में नदी की सतह पर स्वास लेने आते है।

वयस्क गांगेय डॉल्फिन का वजन 150 किलोग्राम तक हो सकता है। मादाएं नर से बड़ी होती है। मादा की अधिकतम लंबाई 2.67 मीटर और नर की 2.12 मीटर होती है। मादाएं 10-12 वर्ष की आयु में यौन परिपक्वता प्राप्त करती हैं, जबकि नर पहले परिपक्व हो जाते है। गर्भधारण की अवधि 9-11 महीने होती हैं और मादा 2-3 साल में मार्च से अक्टूबर माह के दौरान यह एक बार में केवल एक बच्चे को जन्म देती है। बच्चा जन्म के समय डार्क स्लेटी ग्रे रंग के होते हैं और वयस्कता में चिकनी और बालों रहित त्वचा के साथ स्लेटी ग्रे रंग के हो जाते है।

डॉल्फिन कछुओं, मगरमच्छों और शार्क की कुछ प्रजातियों के साथ-साथ दुनिया के सबसे पुराने जीवों में से एक है। गांगेय डॉल्फिन आम तौर पर अंधी होती हैं और अपने शिकार को अनोखे तरीके से पकड़ती है। वह एक अल्ट्रासोनिक ध्वनि का उत्सर्जन करते हैं जो शिकार तक पहुंचती है। डॉल्फिन तब इस छवि को अपने दिमाग में दर्ज करती हैं और बाद में अपने शिकार को पकड़ लेती है।

ख़तरा: नदियों पर बनने वाले बांध गांगेय डॉल्फिन के लिए सबसे बड़ा खतरा है। बांध इनके तथा इनके मुख्य भोजन मछलियों के प्रवास, प्रजनन तथा उनके प्राकृतिक आवास को बाधित करते है। इसके अलावा भारी प्रदूषण, मछली पकड़ने की गतिविधियों में वृद्धि, अवैध शिकार और पोत यातायात भी इनके लिए अन्य मुख्य खतरे है।

इरावदी डॉल्फिन
(ओर्काएला ब्रेविरोस्ट्रिस)

आईयूसीएन रेड लिस्ट (IUCN Red List) - संकटग्रस्त (Endangered)। भारतीय वन्यजीव संरक्षण अधिनियम, 1972 -अनुसूची I। साईट्स (CITES) - परिशिष्ट I

इरावदी डॉल्फिन एक यूरीहैलाइन प्रजाति होती हैं, जो कि मीठे और खारें दोनों पानी में रह सकती है। इसका आवास स्थान बंगाल की खाड़ी दक्षिण पूर्वी एशिया है। इस प्रजाति का नाम बर्मा की प्रमुख नदी इरावदी के नाम पर पड़ा है जहां यह बहुतयात मात्रा मे पायी जाती है। इन डॉल्फिन के दोनों जबड़ों में 12-19 दांत होते हैं। इनका माथा उभरा हुआ तथा इनकी एक छोटी चोंच होती है। इनका मुख्य भोजन कांटेदार मछली और उनके अंडे होते है।

ख़तरा: इन प्रजातियों की घटती संख्या का मुख्य कारण गिल नेट और इलेक्ट्रोफिशिंग है। आवास क्षरण, बांध का निर्माण तथा कीटनाशक संदूषण भी इनके लिए अन्य मुख्य खतरे है।